इकाई 16

स्वतंत्रता एवं आजादी

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 बर्लिन और गणतंत्रीय सिद्धांत

16.3 स्वतंत्रता का मूल्य

16.4 स्वतंत्र राज्य और स्वतंत्र नागरिक

16.5 सारांश

16.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- आरंभिक विचारकों की आजादी और स्वतंत्रता की संकल्पनाओं को समझने के योग्य बन सकेंगे;
- राजनीतिक मूल्य के रूप में आजादी और स्वतंत्रता पर विविध सैद्धांतिक दृष्टिकोण भी प्रदान कर सकेंगे; और
- स्वतंत्रता और आजादी पर वाद-विवाद का मूल्यांकन कर सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

आजादी पर चर्चा करने से पहले इससे जुड़े कुछ अन्य शब्द - 'उदारवाद' और 'स्वेच्छातंत्रवाद' से आजादी के मूल्य को अलग से स्पष्ट करना उपयोगी होगा। उदारतावाद - ऐसे राजनीतिक विचारों के समूह को दर्शाता है, जो राजनीतिक चिंतन और राजनीतिक गतिविधि के भीतर समर्थन प्राप्त किए हुए हैं। उदारतावाद के साहित्य से जुड़े प्रमुख विचारकों में शामिल हैं - लाके, मांटेस्क्यू, संघवादी, कांस्टेंट, द ताकुविल, जे एस मिल, टी एच ग्रीन, कार्ल पापर, पी हेक और जॉन रॉल और जोसफ राज। एक बात जो शायद इस सूची के सदस्यों को एकजुट करती है, वह है कि ये सभी निजी स्वतंत्रता के ठोस मूल्य पर जोर देते हैं। कुछ के लिए उदारतावाद का सार लाके के इस दावे में निहत है कि सभी मनुष्य जन्म से मुक्त और समान हैं, बाकी के समानता संबंधी वचनबद्धता पर कॉप उठते हैं। फिर भी कुछ के लिए उदारतावाद लोकतांत्रिक संस्थानों में भाग लेने के अवसर की माँग करते है। कुछ उदारवादी इस बात पर ध्यान नहीं देते और जोर देते हैं कि लोकतंत्र एक अलग या अधीनस्थ मूल्य या किसी भी मूल्य को दर्शाता नहीं है या यह स्वतंत्रता को एक खतरा है।

प्रमुख उदारवादी विषयवस्तुओ में शामिल हैं - निजी संपत्ति का अधिकार और कानून के नियम का पक्ष समर्थन और साथ ही साथ पारंपरिक स्वतंत्रता की प्रतिरक्षा - बोलने और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संघ बनाने की स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता, अपने मनपसंद का काम करने की स्वतंत्रता और राजनीतिक निर्णय प्रक्रियाओं में भाग लेने की स्वतंत्रता।

सामूहिक प्रतिरक्षा, नकारात्मक अधिकारों के संरक्षण, गैर-हस्तक्षेप के अधिकार और संविदाओं के प्रवर्तन के लिए स्वेच्छातंत्रवाद ऐसे व्यक्ति की सैद्धांतिक मुद्रा है जो सरकार के सामर्थ्य को कड़े शब्दों में सीमित करते हैं।

एक तरीके से आजादी को राजनीतिक मूल्य के रूप में केंद्रित किया जा सकता है। यह भी दावा किया जाता है कि आजादी मूल्य-तटस्थ संकल्पना नहीं है। यह सदैव नियामक और सकारात्मक नैतिक उत्तरदायित्व से जुड़ी होती है। अतः उदारता के रूप में दशा को व्यक्त करने का अर्थ है इसे सकारात्मक मूल्य देना और इसके लिए मामला बनाना शुरू करना। आजादी और स्वतंत्रता के बीच का अंतर भी महत्वपूर्ण है। आजादी की तुलना में स्वतंत्रता की संकल्पना अधिक महीन है और इसका मूल्यांकन पक्ष भी महीन है। जॉन स्टूआर्ट मिल आजादी पर अपने निबंध के पहले वाक्य में अस्वीकरण के साथ कहते हौ कि इस निबंध का विषय इच्छा की आजादी नहीं है इसलिए दुर्भाग्यवश दर्शनशास्त्रीय अनिवार्यता के गलत सिद्धांत के उलट है, बल्कि यह नागरिक या सामाजिक आजादी' है।

बॉक्स 16.1: लोकंतत्र और नागरिक स्वतंत्रता

मिल इन दर्शनशास्त्रीय प्रश्नों को अलग करने में सही हो सकता है। उसका विशिष्ट उद्देश्य लिबर्टी की संकल्पना की पहुंच को सीमित करता है, जब इसे खुला प्रश्न होना ही है चाहे आजादी का प्रश्न समाप्त हो जाए जब हमने शक्ति की प्रकृति और इसकी सीमा की छानबीन की जो कि वैध रूप से समाज द्वारा व्यक्ति विशेष पर लागू की जा सकती है। मिल इस बाद वाले प्रतिबंध को जानबूझ कर थोपता है क्योंकि उसका मानना है कि उसके समय में लोकतंत्र नागरिक आजादी को तीखी चुनौती देता है। उसके मस्तिष्क में तानाशाही की संभावना है और लोकतंत्र की सोच जो सामाजिक सोच और व्यैक्तिक सनकी असहिष्णुता को उत्पन्न कर सकती है। वह अमेरिका में ताकविल के लोकतंत्र की रिपोर्ट में विश्वास रखता है, नगर सभा में सभी को शक्ति मान दो और समनुरूपता जल्द ही संकुचित प्राथमिकता बन जाएगी। ये खतरे वास्तविक हैं लेकिन आजादी को ऐसे लोकतांत्रिक संस्थान चाहिए ठीक उसी तरह जैसे लोकतांत्रिक संस्थानों को ठोस आजादी की आवश्यकता है।

16.2 बर्लिन और गणतंत्रीय सिद्धांत

अब हम आजादी और स्वतंत्रता के विश्लेषण की ओर रुख करते हैं।

ईस्साह बर्लिनः नकारात्मक एवं सकारात्मक दर्शनशास्त्र

ईस्साह बर्लिन का उद्घाटन भाषण 'टु आस्पैक्ट्स ऑफ लिबर्टी' 20वीं शताब्दी में राजनीतिक दर्शन के संदर्भ में एक प्रारंभिक योगदान सिद्ध हुआ है। बर्लिन नकारात्मक और सकारात्मक आजादी में भेद करता है और उसकी नजर में आजादी के ये विविध नजरिए दो विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों के रूप में नजर आते हैं।

यदि हम कहते हैं कि 'ऐसा क्षेत्र कौन सा है जिसके अंतर्गत व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को दूसरों के हस्तक्षेप के बिना वह कार्य करने की छूट दे दी जाए जो वह करने के योग्य है, तो हम अभिकर्ता की नकारात्मक आजादी को उजागर करते हैं। इस नजरिए से 'राजनीतिक उदारता' वह क्षेत्र है जिसमें मनुष्य दूसरो के हस्तक्षेप के बिना काम कर सकता है'। यदि बजाय इसके हम कहते हैं कि स्रोत या हस्तक्षेप का स्रोत क्या या कौन है तो कौन क्या करेगा इसका निर्धारण वह करेगा? हम अभिकर्ता की सकारात्मक आजादी को स्पष्ट करने पर लक्षित हैं। यह बाद में ऐसी स्वतंत्रता के रूप समन्वित में नजर आती है जिसमें मनुष्य स्वयं अपना मालिक होता है।

नकारात्मक आजादी

नकारात्मक आजादी के सरलतम रूपांतर के स्पष्ट प्रतिपादक थॉमस हाब्स थे जिसने स्वतंत्र मनुष्य की संकल्पना को परिभाषित किया जो अपनी बुद्धिमता से वह करने के योग्य है जो वह कर सकता है। नकारात्मक आजादी अक्सर अवपीड़न के अभाव के रूप में देखी जाती है जहाँ अवपीड़न को अन्य अभिकर्ताओं के संकल्पित हस्तक्षेप के रूप में देखा जाता है। हौबेसियन की नकारात्मक

आजादी जो कि जबर्दस्त चुनौतियों और निवारण के अन्य साधनों से समझौताबद्ध नजर आती है वह अक्सर ऐसे सिद्धांतों के विरोध में है जहाँ मात्र अयोग्यताएं उदारता को दर्शाती है। इस कहावत द्वारा इस बिंदु को स्पष्ट किया जाता है कि बाज की तरह न उड़ पाना या व्हेल की तरह न तैर पाना (मनुष्यों के लिये) आजादी का अभाव नहीं है।

अभ्यास 16.1

"नकारात्मक" आजादी की संकल्पना को रेखांकित कीजिए। इसके दोषों की चर्चा कीजिए और अपनी डायरी में नोट कीजिए।

बर्लिन इस बात पर जोर देते हैं कि हमें (नकारात्मक) आजादी के मूल्य और इसकी शर्तों के बीच भेद करना चाहिए जो आजादी के अभ्यास को संभव बनाती है। अतः देश में प्रेस की स्वतंत्रता होनी चाहिए जहाँ के अधिकांश नागरिक निरक्षर हैं। अधिकांश रूप से, ऐसी शर्त जो पढ़ने-लिखने की स्वतंत्रता को महत्व देती है - वह प्राप्त नहीं होती। ऐसी परिस्थितियों में बर्लिन इस बात पर जोर देगा कि निरक्षरता से स्वतंत्रता की कमी का कोई सरोकार नहीं । स्पष्ट रूप से समाज में कुछ ऐसा गलत है जो अपने नागरिकों को एक स्तर तक शिक्षित करने में असमर्थ है जहाँ वे केन्द्रीय स्वतंत्रताओं का लाभ उठा सकते हैं लेकिन, यह कुछ स्वतंत्रता का अभाव नहीं हो सकता। ऐसी बुनियादी शिक्षा जिसमें साक्षरता शामिल है वह निजी रूप से अच्छी हो सकती है या यह एक मानवाधिकार हो सकती है। इसका प्रावधान कानून की बात हो सकता है और इस की मनाही अन्याय। लेकिन फिर भी जब कभी इसकी बात की जाती है तो हमें ऐसी दशाओं से स्वतंत्रता के अभाव को अलग करना चाहिए जिसके अंतर्गत औपचारिक स्वतंत्रता लागू करना मुश्किल या असंभव होता है।

ऐसा महत्वपूर्ण बिंदु जो बर्लिन हमें दिखाना चाहता है वह है कि विविध बुनियादी मूल्यों में द्वंद्व हो सकता है। नैतिक उलझन या असमाधेय (जिसका समाधान न हो) विपत्ति के हालातों के न्याय अथवा सुरक्षा की मांगों के कारण उदारता को कांटा छाटा जा सकता है या इसके विपरीत बढ़ाया जा सकता है।

बॉक्स 16.2: बर्लिन और सकारात्मक उदारता

बर्लिन द्वारा परिभाषित सकारात्मक उदारता इस प्रकार है: "आजादी" शब्द का सकारात्मक नजरिया व्यक्तिविशेष की इच्छा अर्थात अपना मालिक खुद बनना की इच्छाशक्ति से उत्पन्न होता है। मैं चाहता हूँ कि मेरा जीवन और मेरे निर्णय किसी बाहरी शक्ति की बजाय मुझ पर ही निर्भर करें। मैं किसी और की बजाय अपनी मर्जी का मालिक बनना चाहता हूँ। मैं लक्ष्य बनने की बजाय स्वयं एक विषय बनना चाहता हूँ। मैं कर्ता बनना चाहता हूँ जो अपने निर्णय ले सके न कि दूसरे उसके लिए निर्णय लें। मैं पशु या दास की तरह किसी और के हाथ की कठपुतली नहीं बनना चाहता बल्कि अपने निजी लक्ष्यों और नीतियों को बनाना चाहता हूँ। और उन्हें पाना चाहता हूं। यह कम से कम उसका भाग है जो मेरा मतलब होता है जब में यह कहता हूं कि मैं बुद्धि सम्पन्न हूं और यही मेरा कारण है जो मुझे शेष विश्व से एक मनुष्य के रूप में अलग करता है। सर्वोपरि मैं अपने प्रति एक चिन्तन पूर्ण इच्छुक सक्रिय मनुष्य के रूप सजग बनना चाहता हूँ जो अपनी चुनावों की जिम्मेवारियों के भार को समझे और उन्हें अपने विचारों व उद्देश्य के संदर्भ में समझा सके। मैं तभी स्वयं को मुक्त मानूँगा जब ये सब बातें मेरी सत्य साबित होंगी और स्वयं को दास मानूंगा यदि मुझे यह अहसास दिलाया गया कि यह सत्य नहीं।

बर्लिन की उदारता की ऐतिहासिक रूपरेखा का वैश्लेषिक सार इस प्रकार है :

क) आत्म-नियंत्रण् एवं आत्मसिद्धि

इसमें मेरी निजी इच्छाओं - आदेश, सुदृढ़ीकरण या इनके निराकरण पर मेरा काम करना शामिल है जो इस बात के साथ जुड़ा हुआ है कि क्या इसे करना मेरे लिए सही या अच्छा है। यह एक जटिल धारणा है जिसकी जड़ें काम की स्वतंत्रता में निहित हैं। आधुनिक समय में इस किस्म का विकास लॉक, रूसो, कांत और हेगल के माध्यम से देखा जा सकता है। यह हैरी फ्रैंकफर्ट और चार्ल्स टेलर के हाल ही के कार्य में दुबारा नजर आया है। हम इस विचार के आदी हैं कि हम आत्मनियंत्रण को दर्शाते हैं जब हम लालसा को रोकते हैं। काम की स्वतंत्रता हमारी ऐसी योग्यता में शामिल है ताकि ऐसी इच्छाओं का मूल्यांकन किया जा सके जो हमें ऐसा काम करने के लिए उकसाती है और यह फैसला करने में सहायक होती है कि क्या इसकी पूर्ति की जाए या नहीं। इस आधार पर स्वतंत्रता का प्रतिमान हमारी इच्छाओं के विरुद्ध जाता है जिन्हें हम सभी करना चाहते हैं या जिन्हें करना हम बेहतर समझते हैं। लेकिन जैसा कि हेगल ने दर्शाया, स्वतंत्रत अभिकर्ता के लिए सबसे बेहतर है जिसमें उपयुक्त सोच विचार के बाद कि हम ये समझें कि काम के लिए क्या करना बेहतर है। यह वह खोजना है जो हम सर्वाधिक चाहते हैं।

पितृसत्तावाद

मान लीजिए मैं आत्म नियंत्रण लागू करने के योग्य नहीं हूँ। मैं विकल्पों के पूर्ण मूल्य को शायद नहीं समझता। उस बच्चे की तरह जो कड़वे-स्वाद वाली (लेकिन प्राण रक्षक) औषधि लेना पसंद नहीं करता। मुझे अपनी वास्तविक रूचियों का नहीं पता। ऐसी परिस्थितियों में समझदार अभिभावक तुनकमिजाज नहीं होगा। वह जबर्दस्ती औषधि देगा/देगी। श[illegible] तुम्हारे लिए मुझ पर नियंत्रण कायम करना सही नहीं होगा कि मैं प्राप्त करने या कायम रखने के योग्य नहीं हूँ? शायद स्वतंत्रता के लिए यह जरूरी नहीं कि मेरे ऊपर आप जो नियंत्रण कर सकते हैं, वह आत्म नियंत्रण की मेरी खुद की शक्ति को कम कर देगा। यह विचार विशेष रूप से कारगर है, जहाँ आपका पितृसत्तात्मक अंतःक्षेप मेरे लिए स्वायत्त चयन की दशाएं सृजित करता है जो मेरी निजी गतिविधियों को निष्फल कर देती है।

ग) सामाजिक आत्म नियंत्रण

लेकिन यदि मैं आत्म-नियंत्रण के माध्यम से अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करना है और यदि आप उपयुक्त पितृसत्तात्मक हस्तक्षेप द्वारा मेरी स्वतंत्रता को बढ़ावा देते हैं तो क्या शायद आगे मेरी स्वतंत्रता संस्थागत उपायों द्वारा विकसित नहीं होगी जिनका मैं समर्थन करता हूँ? रूसो के सामाजिक संविदा के गणतंत्र में नागरिक नियमों को बनाकर नैतिक और राजनीतिक उदारता की प्राप्ति करते हैं जो उन पर और उनके साथ-साथ अन्यों पर भी लागू होती है। यदि व्यक्ति के रूप में मैं ऐसी लालसा को नहीं रोग सकता जो मुझे नुकसान पहुंचा सकती है तो क्या कुछ सामाजिक तंत्र को बनाने में यह अच्छी युक्ति नहीं होगी जो मेरे संकल्प को तेज करेगी? यदि मुझे लगता है कि गलत काम की सजा मुझे सीधे रास्ते पर रखेगी जो समझदारी अकेले मुझे इसका अनुसरण नहीं करने दे सकती तो क्या मुझे ऐसे सामाजिक अवरोधों को स्वीकार कर लेना चाहिए जो मेरी निर्बाध नैतिक शक्तियों से अधिक प्रबल है? और ऐसा करने में क्या मैं अपनी निजी स्वतंत्रता का विस्तार नहीं करता?

घ) राज्य सेवा

एक अविवेकी नागरिक जो आत्मसंयम बरतने में असमर्थ है और सामाजिक बल की युक्तियां बनाने की पर्याप्त दूरदर्शिता नहीं रखता वह भी परोक्ष रूप से स्वतंत्रता की प्राप्ति कर सकता है और दूसरी ओर यदि उसके असमर्थन और सहभागिता के अभाव के बावजूद राज्य अनिवार्य नियंत्रण को प्रभावित करता है। राज्य हमारे असल हितों की सेवा में हमें नियंत्रित कर सकती है इसके द्वारा हमें स्वतंत्र बनाती है।

16.3 स्वतंत्रता का मूल्य

मार्क्स की "स्वतंत्रता" की संकल्पना दरअसल दुर्खाइम की स्वायत्त आत्म नियंत्रण की धारणा के काफी नजदीक है और इसे निश्चित तौर पर उपयोगितावादी दृष्टिकोण जैसा नहीं समझना चाहिए। "स्वतंत्र" और "बौद्धिक जितने हेगल की रचनाओं में घनिष्ठता से जुड़े है उतने ही मार्क्स की रचनाओं से भी जुड़े हुए हैं। उपयोगितावाद में मौजूद धारणा को हेगल हटाते हैं कि मनुष्य उस हद तक काम करने को स्वतंत्र है जो उसकी प्रवृत्ति उसे करने को कहती है। सड़कों पर मनुष्य स्वतंत्र है यदि वहाँ वह जो चाहे वह करने के लिए मुक्त हो लेकिन उसकी गूढ़ स्वेच्छाशक्ति बताती है कि वह स्वतंत्र नहीं है। स्वतंत्रता अहम् का प्रयोग नहीं है लेकिन असल में इसके उलट है। कोई भी कार्य "मुक्त" की बजाय "स्वेच्छाचारी" होता है यदि उसके विकल्प क्रिया में अयुक्तिसंगत चुनाव शामिल हों जिनमें व्यक्ति विशेष को मुक्त माना जाता है। कोई पशु जब किसी प्रतिकूल स्थिति में भागने की बजाय दुश्मन से लड़ने का निर्णय लेता है तो यह काम वह खुलकर नहीं करता। मुक्त होने का अर्थ है, स्वायत्त होना और बुद्धिसंगत नियंत्रण के परे बाहरी या आंतरिक बलों से बाधित न होना; यही कारण है कि स्वतंत्रता मनुष्य का विशेषाधिकार है क्योंकि सिर्फ मनुष्य ही है जो समाज की सदस्यता के माध्यम से न सिर्फ समाज के स्वरूप को बल्कि संकल्प शक्ति के अंश को भी नियंत्रित करने के योग्य है। हेगल के विचार में यह संभव है यदि तर्कसंगत विचार के साथ व्यक्ति की पहचान मौजूद हो। मार्क्स के लिए, यह ठोस सामाजिक पुनर्संगठन कम्युनिस्ट समाज की स्थापना को पहले से मानकर चलता है।

बॉक्स 16.3: व्यक्ति एवं समाज

समाज में व्यक्ति की स्थिति उससे संबंधित विशेषता के अनुरूप होगी। जैसे वैज्ञानिकों का वैज्ञानिक समुदाय से संबंधित होना। वैज्ञानिक जो ऐसे मानदंडों को स्वीकारता है जो वैज्ञानिक गतिविधि को परिभाषित करते हैं, वह उसकी तुलना में कम स्वतंत्र नहीं है जो जानबूझकर उनका खंडन करते है; इसके विपरीत वैज्ञानिक समुदाय का सदस्य होने के नाते वह ऐसे साझे उद्यम में भी भाग लेता है जो उसे आगे बढ़ने की अनुमति देते हैं और जो उसे निजी क्षमताओं को सर्जनात्मक रूप से लागू करने की अनुमति भी देते हैं। इस तरह नैतिक आवश्यक बिंदुओं की स्वीकृति बाहरी अवरोधों की स्वीकृति नहीं है बल्कि तर्कसंगत की पहचान करना है।

हम यह नहीं कहते कि मार्क्स और दुर्खाइम के नजरियों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है जिसे "गैर-ऐतिहासिक" महत्ता के रूप में देखा जा सकता है। दुर्खाइम इस बारे में सुस्पष्ट है कि व्यक्ति का व्यक्तिगत पूर्णतया उस समाज की विशेषताओं से प्रभावित होता है जिसमें वह रहता है और जिसमें उसका सामाजिककरण होता है। लेकिन इस संदर्भ में वह पूर्ण ऐतिहासिक सापेक्षवाद को स्वीकार नहीं करता अर्थात हर व्यक्ति चाहे वह आदिम हो या सुसंस्कृत वह समद्वैध है क्योंकि हर व्यक्ति के भीतर अहम् आवेग और नैतिक अर्थ के बीच परस्पर विरोध चलता है। मार्क्स इस किस्म के मनोवैज्ञानिक मॉडल को नहीं अपनाता। मार्क्स की संकल्पना में व्यक्ति और समाज के बीच ऐसे स्पष्ट प्रतिरोध के लिए कोई गैर-सामाजिक आधार नहीं है। मार्क्स के लिए मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है ... निजी मानव जीवन और प्रजाति जीवन कोई अलग बातें नहीं हैं। व्यक्ति और समाज के बीच अहमवादी प्रतिरोध जो कि बुर्जुआ समाज में एक विशिष्ट रूप में पाया जाता है, श्रम विभाजन के विकास का परिणाम है। दूसरी तरफ दुर्खाइम की मानव व्यक्तित्व की द्वैधता वाली पहचान ऐसी कल्पना पर आधारित है कि शिशु का अहम् जो कि जैविक बातों अर्थात जिनके साथ उसका जन्म होता है, उसे बच्चे के उत्तरवर्ती नैतिक विकास द्वारा न उलटा जा सकता है। और न ही उसका पूर्ण उन्मूलन किया जा सकता है।

मार्क्स और दुर्खाइम दोनों मानव आवश्यकताओं के अनुकूलन में ऐतिहासिक आयाम पर जोर देते हैं। दुर्खाइम के लिए अहम्वाद सिर्फ समाज के स्वरूप के संदर्भ में ही सामाजिक एकता की चुनौती बन जाता है जिसमें मानव संवेद शक्तियाँ काफी विस्तृत बन जाती हैं अर्थात "सभी साक्ष्य" सभ्यता की वृद्धि को बढ़ाने के लिए हमारे भीतर के दो मनुष्यों के बीच के संघर्ष को बढ़ाते हैं।

अभ्यास 16.2

मनुष्य और समाज के बीच अहम्वादी प्रतिरोध का वर्णन कीजिए। क्या इसका उन्मूलन किया जा सकता है?

जब तक हम जो चाहते हैं उसका कोई मूल्य नहीं है तब तक इसका पीछा करना व्यर्थ है। अतः विचारों की स्वतंत्रता और चर्चा उपयोगी है क्योंकि चिंतन और चर्चा उपयोगी है। स्वतंत्रता पर हाल ही में हुए सर्वाधिक प्रभावशाली कार्य में जोसफ राज का सुझाव है कि स्वतंत्रता का मूल्य होता है क्योंकि यह निजी स्वायत्तता की शर्त के रूप में परिभाषित की जाती है।

क) कार्य की स्वतंत्रता

मुक्त रूप से काम करने के लिए मेरी इच्छाओं का ठोस कारण भी होना चाहिए। मुक्त कार्य के महत्वपूर्ण तत्व लॉक, रूसो और हेगल के अधिकार के दर्शनशास्त्र में देखे जा सकते हैं। यह स्वायत्त कार्रवाई के बारे में चिंतन के एक भाग पर पकड़ बनाते हैं - हम स्वतंत्र हैं जब हम जो करते हैं उसके नियंत्रण में होते हैं। इनके विरुद्ध वे बिंदु हैं जिन्हें घटना क्रिया की दृष्टि से हम अपनी सर्वाधिक मजबूत इच्छाएं कहते हैं; जब ये समुदायों की नैतिक माँगों या नैतिकता से जुड़ जाती हैं तो हम इस प्राधिकार के रूप में देखते हैं।

ख) स्वायत्तता

स्वतंत्रता के मूल्य का तेजी से अनुमान लगाया जा सकता है। यह उस चीज का मूल्य है जो हम प्राप्त करना चाहते हैं या जिसे हम जैसा करना चाहते हैं, [illegible] ते हैं। अतः स्वतंत्रता का मूल्य करण कारक होता है; यह उस मूल्य के बराबर है जो हम करना चाहते हैं जिसे पाने में हमें योग्य बनाने में स्वतंत्रता सहायक होती है। यदि हम किसी तरीके से मुक्त नहीं हैं तो हम जोखिम (सामन्यतया सजा का) उठाकर अपनी इच्छा को आमतौर पर पूरा करते हैं। यह स्वतंत्रता का मूल्य सरल और स्पष्ट है। इसके अलावा यह स्वतंत्रता को उनके मूल्य के अनुसार श्रेणी देने में हमें सक्षम बनाता है। यह गतिविधियों के मूल्य का प्रकार्य है जिसकी अनुमति स्वतंत्रता देता है। इससे अधिक महत्वपूर्ण है इच्छा का उद्देश्य, इसे प्राप्त करने की स्वतंत्रता का जितना महत्व है उससे अधिक गंभीर ऐसे मामलों में प्रतिबंध है जहाँ हमें स्वतंत्र होने से रोका जाता है।

स्वतंत्रता की शर्तों के अंतर्गत हम कांत की स्वायत्तता को लागू कर सकते हैं जो अभिकर्ताओं को ऐसे अवसरों की अनुमति देती है कि यह देखा जा सके कि सही काम कौन सा है जिसे किया जा सकता है। लेकिन यदि यह स्वतंत्रता का मूल मूल्य है तो हम देख सकते हैं कि स्वतंत्रता ऐसी श्रेष्ठ परिस्थितियां नहीं दे सकती जिसमें स्वायत्तता विकसित की जा सकती है।

ग) नैतिक स्वतंत्रता

रूसो के नजरिए से स्वतंत्रता वह है जिसकी प्राप्ति उन लोगों द्वारा की जाती है जो अपनी इच्छाओं को नियंत्रित कर सकते हैं। इसे आगे कांत की स्वायत्तता संबंधी इच्छाशक्ति में विकसित किया जाता है जो इस बात पर जोर देती है कि हम किस तरह अपनी विविध इच्छाओं के मद्देनजर तर्कसंगत विचार-विमर्श के अपने संसाधनों को वहन करते हैं। ये वे इच्छाऐं हैं जिन्हें हम (भीतरी मानवीय प्रकृति और प्रकृति (बाह्य) के अर्न्तसंबंधों के कारण सहन करने को बाध्य होते हैं।) यदि हम तर्क के मार्गदर्शन का अनुकरण करते हैं तो हम खुलकर अपनी मर्जी के कार्य कर सकेंगे जो कि कानूनी नियमों को पूरा करने पर आधारित होंगे जिसका अनुसरण करने के सभी योग्य होंगे।

नियम हमें एवं अन्य नागरिकों को यह मान्यता देते हैं कि कर्तव्य का संकीर्ण और सीधा मार्ग हमारी स्वतंत्रता को भंग नहीं करता। यह एक जोखिमपूर्ण तर्क है और यह जोखिम दो विभिन्न दिशाओं से आता है। पहला - यह स्पष्ट खतरा है कि हमारा क्या कर्त्तव्य है इसका निर्धारण दूसरे करेंगे और इसे निभाने के लिए हमें संगठित करेंगे। यह खतरा तब तक टाला जा सकता है, जब तक हम इस बात पर जोर देंगे कि नैतिक आजादी जो कि राज्य की बलपूर्वक शक्ति से प्राप्त की जाती

है वह लोकतांत्रिक संस्थाओं की राजनैतिक उदारता की देन हो। दूसरा खतरा है कि लोकतांत्रिक बहुमतता इसका गलत अर्थ ले सकती है जैसे जेल भेजना और दंड आदि देने से जुड़ी गतिविधियाँ। चूंकि लोकतांत्रिक निकायों के निर्णय स्वतः गठित नहीं करते कि नैतिक रूप से क्या स्वीकार्य है या नहीं, यह एक स्थायी संभावना है। नैतिक आजादी का लक्ष्य हमें राजनीतिक बंधनों में बाँध सकता है।

बॉक्स 16.4: लोकंतत्र पर सीमाएँ

इसके बहुत से पूरक उत्तर हैं ... पहला कि हमें संस्थानों की अपनी विनिर्दिष्टता का सहारा लेना चाहिए जो कुछ शर्त के साथ राजनीतिक आजादी को बढ़ावा देती है जो लोकतांत्रिक निर्णय संबंधी प्रक्रियाओं की क्षमता की सीमाओं का निर्धारण करती है। दूसरा मिल के सिद्धांत का स्पष्ट निहितार्थ सार्वजनिक मान्यता है कि गलत बातें जिन्हें निरंतर उदारता के साथ वर्जित किया जा सकता है, उसमें ऐसी गलत बातों का समावेश नहीं है जिन्हें नागरिक अकेले ही अपने लिए करते हैं... यह पितृसत्तावाद का मुद्दा है।

घ) सहिष्णुता

यदि उदारता जैसी कोई चीज है तो वह सहिष्णुता है लेकिन जैसा कि एक टीकाकार ने कहा यह एक समय में अनिवार्य और नामुमकिन नजर आती है। सहिष्णुता अनिवार्य है क्योंकि वे लोग जो एकजुट होकर रहते हैं, उन्हें अपनी नैतिक आस्थाओं के बीच भारी फर्क नजर आ सकता है जिसे सम्मत आधारों पर तर्क से नहीं सुलझाया जा सकता। गूढ़ द्वंद्व की परिस्थितियों की वजह से यह असंभव है जो सहिष्णुता की माँग करती है और जिसे अक्सर द्वंद्वकारी पक्षों की जिद के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। ये फर्क ऐतिहासिक रूप से ऐसे रहे हैं जो हिंसक द्वंद्व को उत्पन्न करते हैं। तटस्थ प्रेक्षक के लिए यह बात कम महत्वपूर्ण हो सकती है । सहिष्णुता के लिए जरूरी है कि कोई ऐसे काम में हस्तक्षेप न करें जो किसी की नजरों में नैतिक रूप से गलत है।

उदाहरण के तौर पर ऐसे राज्य की कल्पना कीजिए जहाँ बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक धर्म मौजूद हैं। या जहाँ धर्म विभाजन है और कानून बनाने की शक्ति सिर्फ एक धार्मिक समुदाय के हाथों में है। क्या राज्य को ऐसे लोगों को सहन करना चाहिए जो अपने धर्म के आधार पर विधि नियमों को तोड़कर विधि निर्माताओं के मस्तिष्क में गलत बातें भरते हैं। संक्षेप में तर्क दिया जा सकता है कि नैतिकता का सार्वभौमिक आयाम है जो उसके द्वारा झूठा साबित किया जाता है जो इसके स्रोत को सत्तावादी धार्मिक ग्रंथ मानते हैं। निस्संदेह, मानने वाला ऐसी समझाई गई बातों के सार्वभौमिक प्राधिकार को पक्का मानता है - यह आशा नहीं की जा सकती कि ऐसी समस्याएं तुरंत निपटा ली जाएं - लेकिन उदारतावादी तर्क की दिशा आसानी से पकड़ी जा सकती है।

16.4 स्वतंत्र राज्य और स्वतंत्र नागरिक

रूसो का कहना है कि प्रकृति के राज्य में हमारी स्वतंत्रता हमारी मुक्त इच्छाशक्ति से उत्पन्न होती है, ऐसी क्षमता जो ऐसी इच्छाओं को रोके जो हमें मजबूर करती है इसके साथ ही जो न दूसरों की मांगों के अधीन हो और न ही अपनी चाहत की वस्तु पाने के लिये उन पर निभर हो। संवीदाकार के रूप में हम ऐसे सामाजिक राज्य से संतुष्ट होंगे जो श्रेष्ठ रूप से इस प्राकृतिक दशा के अनुरूप होगी। प्राकृतिक स्वतंत्रता खो जाती है लेकिन इसका चिंतन हमें ऐसा नैतिक अहसास देता है जिससे हमें समकालीन समाज के संस्थानों को परिचित करा सकते हैं। समाज में स्वतंत्रता के पैमाने की तीन आयामों के साथ वसूला जा सकता है: नैतिक स्वतंत्रता (जिसकी हम पहले ही चर्चा कर चुके है), लोकतांत्रिक स्वतंत्रता और नागरिक स्वतंत्रता।

क) लोकतांत्रिक स्वतंत्रता

स्वतंत्रता के आयाम के रूप में लोकतंत्र के लिए स्वतंत्रि का आयाम सरल है; लोकतंत्र अपने नागरिकों को निर्णयन प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर देती है जो कानून के रूप में इनके आचरण

को शामिल करती है। कांत के लिए, स्वायत्त कार्य कानून के अनुरूप जीवन यापन करने से संबंधित है जिसे व्यक्ति ने अनुसरण करने की दृष्टि से स्वयं निर्धारित किया है। लोकतंत्र इस मॉडल का मोटा राजनीतिक सादृश्य दर्शाता है : स्वतंत्रता कानून के अनुरूप जीवन यापन करने से संबंधित है जिसे कि सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू करने के लिए बनाया गया है।

बर्लिन का तर्क है कि लोकतंत्र उदारता से काफी भिन्न आदर्श है - महत्वपूर्ण निर्णय स्वतंत्रता को चुनौती दे सकते हैं जैसा कि जे.एस.मिल का तर्क है, यह तर्क चाहे कितनी भी विश्वसनीय लगे इसे निणर्यात्मक समझना गलत होगा। लोकतंत्र के अलावा कोई भी व्यवस्था नागरिकों को किसी भी महत्वपूर्ण फैसले में भाग नहीं लेने देगी। लोकतांत्रिक गतिविधि हमें इस बात का दावा करने का अवसर प्रदान करती है कि हम प्राधिकार के दावेदारों से मुक्त हैं। स्वतंत्रता के लिए लोकतंत्र अनिवार्य है लेकिन इसकी अपनी निजी विशिष्ट चुनौतियाँ भी हैं।

ख) नागरिक स्वतंत्रता

ऐसे नागरिक जो स्वतंत्रता को महत्व देते हैं और ऐसे लोकतांत्रिक संस्थानों में अपनी सहभागिता के माध्यम से इसे अभिव्यक्त करते हैं, वे कानूनी तौर पर या कम औपचारिक तंत्रों के माध्यम से अपने साथियों के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते। ऐसे संस्थानों को स्थापित करने पर उनकी गूढ़ चिंता जो प्रत्येक को सशक्त करते हैं, उन्हें ऐसे उपायों को पेश करने के प्रति सजग बनाते हैं जो निजी पसंद को प्रतिबंधित करते हैं। लोकतांत्रिक संस्थानों और उनकी संबद्ध स्वतंत्रता की अनिवार्यता को स्वीकार करके नागरिकों को संरचनात्मक और अनुबोधक कानूनों में अपनी अच्छे जीवन के संबंधित विविध संकल्पनाओं को मूर्त करने के अवसर प्रदान करने को महत्व देते हुये, वे स्वयं इन मूल्यों के अपने प्रतिपादन को नियंत्रित करने में हिचकिचाऐंगे। बुद्धिसंगत मनुष्य के लिए यह सोचना गलत होगा कि दूसरे तर्कसंगतता को चुनौती देते हैं। जिस तरह हम अपनी निर्ण्यन प्रक्रिया में बाहरी अवरोधों को अनुमोदित करने के लिए तैयार किए जाते हैं, तो क्या इसी तरह हमें ऐसे संस्थानों को अपनाने के लिए भी तैयार किया जाना चाहिए जो मानव की सबसे खराब गलती के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करते हैं।

16.5 सारांश

स्वतंत्रता पर बर्लिन के कार्य ने दर्शनशास्त्रीय परिशुद्धता के मौजूदा मानकों की उल्लेखनीय प्रस्तुति की है। उसने दर्शाया है कि एक महत्वपूर्ण नीतिपरक संकल्पना कम से कम दो और संभावित रूप से दो सौ विविध विश्लेषणों से प्रभावित हो सकती है। आजादी के बारे में विचार करने का कोई एक ठोस तरीका नहीं है। ऐसे कम से कम दो तरीके हो सकते हैं जिनमें से प्रत्येक समृद्ध परंपरा है जो पृथक घटकों में परिवर्तित हो जाती है ''जो आजादी के मूल्य के बारे में श्रेष्ठ तरीके से सोच कायम करने के लिए दूसरों को चुनौती देती है''। यदि लोकतंत्र या न्याय की तरह आजादी के बारे में विचार करने के यदि बहुत से तरीके हैं तो महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि हमें राजनीतिक मूल्य के रूप में उदारता की महत्ता के बारे में जानने के लिए किस तरीके का चयन करना चाहिए। चयन करने के तरीके जटिल हैं और इसकी मुख्य विशेषताएँ है - बुनियादी रूप से अभिकर्ता मुक्त होते हैं जब उनके अच्छा जीवन जीने के अपने लक्ष्य में कोई बाधा नहीं उत्पन्न की जाती। अवरोधों का अनुमान विस्तृत रूप से लगाया जाना है। राजनीतिक या अधिक विस्तृत रूप से सामाजिक संदर्भ में वे ऐसे नियमों को शामिल करेंगे जो सकारात्मक नैतिकता के मजबूत साधनों के साथ-साथ मंजूरी द्वारा आगे किए जाते हैं। लेकिन व्यक्ति तब परतंत्र होने का दावा कर सकते हैं जब विशेष रूप से सरकार उन्हें संतुष्ट जीवन देने में विफल हो जाती है सरकार विशेष उन्हें सन्तुष्टि के स्तर को प्राप्त करने के पर्याप्त साधन देने में असफल रहती है। सन्तुष्टि के ये स्तर उनके उस जीवन के लिये आवश्यक पूर्व दशा है जो वास्तविकता में उनका जीवन है। राजनीतिक संस्थान इस समझ पर बहुत से तरीकों से उदारता को पोषित कर कर सकता है। आजादी के ठोस सिद्धांत को विशेष रूप से आपराधिक नियम को अच्छे समझना चाहिए। स्वतंत्रता के लिये आवश्यक उन शास्तिक शक्तियों, जो अच्छे जीवन की खोज को सुरक्षित रखें की सीमाओं को सीमांकित करते हुये यह

एक संरक्षण के रूप में काम कर सकता है। सरकार और नागरिको को विशेष रूप से अपने लक्ष्यों के प्रति विनम्र होना चाहिए।

16.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गिड्डन्स, एंथनी, कैपिटलिज्म एंड मॉडर्न सोशल थ्योरी। सीयूपी, 1994

जॉन लेच (2004). फिफ्टी ग्रेट कंटेम्पोरेरी थिंकर्स - फ्रॉम स्ट्रक्चरलिज्म टु पोस्टमॉडर्निटी.